भारत सरकार
कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय
कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग

**लोक सभा**
**अतारांकित प्रश्न सं. 3581**

दिनांक 17 दिसम्बर, 2024

**जलवायु-अनुकूल धान की किस्मों का विकास**

**3581. श्री गौरव गोगोई:**

क्या **कृषि और किसान कल्याण मंत्री** यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) क्या सरकार ने धान की खेती वाले विभिन्न क्षेत्रों की जलवायु परिवर्तन के प्रति संवेदनशीलता का आकलन किया है और यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है;
(ख) क्या सरकार धान की ऐसी जलवायु-अनुकूल किस्मों को विकसित करने के लिए कोई अनुसंधान कर रही है, जो विषम मौसमी परिस्थितियों और कीटों का सामना कर सकें;
(ग) किसानों के कृषि कार्य को जलवायु परिवर्तन के अनुकूल बनाने में मदद करने के लिए कार्यान्वित की जा रही विशिष्ट कार्यनीतियों का ब्यौरा क्या है; और
(घ) क्या सरकार जलवायु परिवर्तन के प्रतिकूल प्रभावों से निपटने हेतु किसानों की वित्तीय सहायता करने के लिए किन्हीं उपायों पर विचार कर रही है और यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है?

**उत्तर**

कृषि और किसान कल्याण राज्य मंत्री
(श्री भागीरथ चौधरी)

**(क) :** जी, हाँ। सरकार ने भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईसीएआर) की अग्रणी नेटवर्क परियोजना "राष्ट्रीय जलवायु-अनुकूल नवोन्मेषी कृषि" (एनआईसीआरए) के माध्यम से समेकित सिमुलेशन मॉडलिंग अध्ययन करते हुए जलवायु परिवर्तन के संबंध में धान उगाने वाले विभिन्न क्षेत्रों में संवेदनशीलता का आकलन किया है। अध्ययन से पता लगा है कि अनुकूलन उपायों को न अपनाए जाने के कारण जलवायु परिवर्तन से बारानी चावल पैदावार में 2050 में 20% तथा 2080 में 47% की कमी आएगी। सिंचित चावल की पैदावार में 2050 में 3.5% तथा 2080 में 5% की कमी आएगी।

**(ख) :** वर्ष 2014 से 2024 के दौरान, चावल (धान) की कुल 668 किस्में विकसित की गई हैं जिनमें से 199 किस्में चरम जलवायु के प्रति अनुकूलनशील हैं जो चरम मौसम स्थितियों को झेलते हुए खड़ी रह सकती हैं, इन किस्मों का विवरण निम्नलिखित है : चावल की 103 किस्में सूखा और जल दबाव के प्रति सहिष्णु हैं; चावल की 50 किस्में बाढ़/गहरे पानी/जलमग्नता के प्रति सहिष्णु; चावल की 34 किस्में लवणता/क्षारीयता/अम्लीयता के प्रति सहिष्णु; चावल की 6 किस्में ताप दबाव के प्रति सहिष्णु तथा 6 किस्में शीत के प्रति सहिष्णु हैं। इसके अलावा, चावल की विकसित की गई 668 किस्मों में से 579 किस्में नाशीजीव तथा रोगों के प्रति सहिष्णु हैं।

**(ग) :** एनआईसीआरए के प्रौद्योगिकी प्रदर्शन घटक के तहत 151 संवेदनशील जिलों के 448 जलवायु-अनुकूलनशील गांवों में जलवायु-अनुकूल प्रौद्योगिकियों पर प्रौद्योगिकी प्रदर्शन तथा क्षमता निर्माण कार्यक्रम आयोजित किए गए। धान से संबंधित कुछ विशिष्ट जलवायु-अनुकूल प्रौद्योगिकियों में निम्नलिखित शामिल हैं : जलवायु-अनुकूल किस्मों का प्रदर्शन, चावल की खेती की वैकल्पिक विधि जैसे वायुजीवी (एरोबीक) चावल, सीधी बीजाई वाले चावल तथा ड्रम सीडिंग, धान प्रतिरोपण से पहले हरी खाद के साथ ढ़ैचा का प्रयोग, संवेदनशील जलवायु स्थितियों के प्रभाव को कम करने के लिए विलंबित मानसून के लिए समुदाय नर्सरी आदि।

**(घ) :** देश में जलवायु परिवर्तन के प्रतिकूल प्रभाव का सामना करने के लिए भारत सरकार ने राष्ट्रीय टिकाऊ कृषि मिशन (एनएमएसए) कार्यान्वित किया है जो राष्ट्रीय जलवायु परिवर्तन कार्रवाई योजना (एनएपीसीसी) के तहत मिशनों में से एक है। जलवायु परिवर्तन के प्रतिकूल प्रभाव से निपटने के लिए भारत सरकार द्वारा एनएमएसए के माध्यम से राज्यों को वित्तीय सहायता प्रदान की जाती है।

*******